प्रा. डा. के. पी. शहा,
अध्यक्ष हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण कॉलिज, कोल्हापुर.

तथा

स्नातकोत्तर प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

दिनांक - 27 नवम्बर 1989.

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. उपाधि के लिए सौ. आशा दस्तगीर आपराद ने मेरे निर्देशन में "मेहरून्निसा परवेज की कहानियों का अनुशीलन" शीर्षक प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध पूरा किया है।

शोध निर्देशक

डा. के. पी. शहा

कोल्हापुर
दिनांक : 27 - 11 - 89

प्राक्कथन

"स्त्री और पुरुष" निसर्ग निर्मित दो मनुष्यजातीं। ये दोनों भी एक दूजे का साथ निभाये, साथ-साथ रहे, निसर्ग और समाज का धर्म निभाकर समाज का प्रवाह अखंडित रूप से प्रवाहित रखो यह निसर्ग का संकेत। लेकिन इनमें से केवल स्त्री के संबंध में ही हजारों सवालों का निर्माण होता है वह क्यों? स्त्री स्वातंत्र्य, स्त्री का स्थान, स्त्री का महत्व, स्त्री के अधिकार, स्त्री पर होनेवाले अत्याचार, स्त्री के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण आदि सवाल तथा इन सवालोंमें से निर्मित समस्यायें केवल नारी के संबंध में ही क्यों निर्माण होती है? इसके क्या कारण हो सकते है? आज की नारी इस शोषण को समझ रही है, और इससे मुक्त भी होना चाहती है। नारी यह कोशिश, नारी "जागरण", नारी मुक्ति आंदोलन तथा "साहित्य" द्वारा कर रही है। स्त्री के मनोभावों को समझकर, उसकी समस्याओंको कहानियोंमे पिरोने का कार्य बहुत सी महिला कथाकारोंने किया है। लेकिन कुछ पुरुष रचनाकार और आलोचक द्वारा महिला कथाकारोंपर यह आरोप लगाया जाता है कि., परिवार के सीमित दायरे में सम्बधों और मूल्यों के बदलाव को व्यक्त करनेवाला लेखन है, जिसमें कामसम्बधों को खास तौरपर लिया गया है या उनका लेखन दोयम दर्जेका होता है अर्थात कहने मात्र से रचनाक्रम दोयम दर्जे का नहीं होता। आजकल तो महिला कथाकारोंने अपने लेखन कार्यसे अपना विशिष्ट स्थान तथा अपना विशिष्ट वर्ग निर्माण किया है, ये तो निःसंशय गर्व की बात है। महिला कथाकारोंका साहित्यसृजन जितनी मात्रा में हो रहा है उसकी तुलना में, उसी साहित्यपर अनुसंधान का कार्य बहुत कम मात्रा में हुआ है।

नारी होने के नाते नारी विषयक विभिन्न विषयोंका चित्रण करनेवाली महिला लेखिकाओंके प्रति आकर्षण स्वाभाविक है। साथ ही मैं "पुरोगामी मुस्लिम सत्यशोधक मंडल" तथा "महिला दक्षता समिती" जैसी संस्थाओं में काम करते वक्त स्त्री दुःख के अनेक रंग, उनके दर्द, विविध समस्या इनका अनुभव करती हूँ, इस अनुभव को लेकर जब मैंने साहित्य पढना आरंभ किया तो यह एहसास हुआ ये कहानियाँ झूठ नहीं है, क्योंकि, इसमें चित्रित दर्द, समस्या सार्वत्रिक है। इन सब

बातों को ध्यान में लेकर मैंने प्रस्तुत विषय का चयन कर लघु शोध प्रबंध पूरा करने का विनम्र प्रयास किया है। समय की पाबंदी तथा स्वयं की मर्यादाओं के कारण प्रस्तुत प्रबंध में कुछ त्रुटियाँ रहना स्वाभाविक है। "मेहरून्निसा परवेजजी के कहानियों का अनुशीलन" यह विषय लेकर आजतक अध्ययन नहीं हुआ है। उस कमी की पूर्ति के उद्देश्य से यह विषय लेकर प्रस्तुत शोध प्रबंध की रचना की गई है।

मेहरून्निसाजी के कहानी साहित्य का अध्ययन करते समय आपके समकालीन महिला कहानिकारों की कहानियोंका अध्ययन संक्षेप में किया है। मेहरून्निसाजी के समग्र साहित्य का अध्ययन किया है, लेकिन उपन्यासों का विवेचन संक्षिप्त है तथा विषय के अनुसार कहानी साहित्य का विस्तारीत रूपसे अध्ययन किया है। साहित्यकार के व्यक्तिगत जीवनानुभव भी निजी साहित्यपर असर करते है, इसी विचार से परवेजजी के जीवनी का परिचय भी संक्षेप में दिया है।

इस शोध - प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

<u>प्रथम अध्याय</u> में - मेहरून्निसा परवेजजी का जन्म, तिथि, स्थल, माता-पिता-पती, शिक्षा, संस्कार तथा प्रेरणा का विवेचन किया है।

<u>द्वितीय अध्याय</u> में - मेहरून्निसा परवेजजी के चार उपन्यास "आंखों की देहलीज", "कोरजा", "उसका घर", "अकेला पलाश" तथा "आदम और हव्वा", "गलत पुरूष", "टहनियोंपर धूप", "फाल्गुनी", "अन्तिम चढाई", ये पाँच कहानीसंग्रहोंका संक्षेप में विवेचन किया है।

<u>तृतीय अध्याय में</u> - आधुनिक महिला कहानीकारोंका संक्षिप्त परिचय करवाया है। जिनमें है - राजेंद्रबाला घोष, उषादेवी मित्रा, सुभद्राकुमारी चौहान, होमवती देवी, सत्यवती मल्लिक, कमला चौधरी, सुभद्राकुमारी सिन्हा, कृष्णासोबती, चंद्रकिरण सौनरेक्सा, शिवरानी देवी प्रेमचन्द, रामेश्वरीदेवी, तेजरानी पाठक, रजनी पनिकर, कृष्णाअग्निहोत्री, मन्नू भंडारी, यशोदादेवी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, दिप्ती खंडेलवाल, चित्रा मुद्गल, इन्दुबाली, ममता कालिया,

सुधा अरोडा, मृणाल पाण्डे, शशिप्रभा शास्त्री, अमृता प्रितम, महादेवी वर्मा, तथा मेहरून्निसा परवेज।

चतुर्थ अध्याय में - मेहरून्निसा परवेजजी के कहानीसंग्रह - "आदम और हव्वा", "गलत पुरुष", "टहनियोंपर धूप", "फाल्गुनी", "अन्तिम चढाई" इन संग्रहों में संग्रहित संपूर्ण कहानीयोंका विकासात्मक अध्ययन - विवेचन किया है।

पंचम अध्याय में - मेहरून्निसा परवेजजी के कहानियोंकी विशेषताओंका समग्र विवेचन किया है। अन्य विशेषताओंके साथ - साथ कहानी तत्वों के आधारपर भी कहानियों का विवेचन किया है।

षष्ठ अध्याय में - लघु शोध प्रबंध का उपसंहार, मेहरून्निसा परवेजजी के कहानियोंद्वारा तथा चर्चा, प्रश्नावली, के आधारपर आपका नारी संबंधी मान्यताओं, भावनाओं, नारीचित्रण के विभिन्न दृष्टीकोण को संक्षेप में स्पष्ट करते हुए निष्कर्ष व्यक्त करनेका प्रयत्न किया गया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

इस कार्य को पूर्णता तक लाने के लिए प्रत्यक्ष और प्ररोक्ष रूप में अनेकों का सहयोग मिला है।

मेरे गुरू एवं निर्देशक " प्रा. डॉ. केशवलाल पी. शहा " जी की सत् प्रेरणाओं के बिना मैं इस कार्य को पूर्ण रूप न दे सकती थी। अतः औपचारिक आभार मात्र से, गुरूऋण से मुक्ति नहीं हो सकती। अतः उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

प्रा. डॉ. द्रवीड, प्रा. डॉ. मोरे, प्रा. कप्पलरकर जी ये मेरे गुरू हैं। जिनकी प्रेरणा, सहाययता, तथा प्रोत्साहन से ओतप्रोत शब्दों ने हमेशा मेरे मन को निराश होने से बचाया और मैं इस कार्य में सफल रही, अतः इन गुरूजनों के प्रति विनम्र भाव से अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

इस लघु शोध प्रबंध के लिए अनेक ग्रंथों की और किताबों की आवश्यकता को पूर्ण करने के कार्य में शिवाजी विश्वविद्यालय ग्रंथालय, महावीर कॉलिज ग्रंथालय, न्यू कॉलिज ग्रंथालय, यशवंतराव चव्हाण कॉलिज ग्रंथालय का सहयोग मिला है। इन सब ग्रंथालयों के अधिकारी वर्ग, सेवक वर्ग के सहिष्णु, व्यवहार के कारण आवश्यक तथा उपयुक्त पुस्तकोंका लाभ हुआ है। अतः इन सब के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ।

इस लघुशोध प्रबंध के लिए सुश्री मेहरून्निसाजी परवेज का सहयोग अनमोल है। गये तीन साल अपने साहित्य, विचारों, पत्रों, संवाद द्वारा मेरे दिलो - दिमागपर साये की तरह आप छा गयी यह शोधप्रबंध इसका मूर्तरूप है। आपके प्रति शब्दों द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन करना मुश्किल है।

इस लेखन के लिए उन सभी लेखकों विद्वानों के प्रति श्रध्दा व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य मानती हूँ, जिनकी कृतियों से मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रेरणा प्राप्त हुई।

इस लघु शोध प्रबंध को सही अर्थ से साकार करने के लिए नारी समस्या का अध्ययन करने का उदात्त दृष्टिकोण प्रदान करनेका कार्य मेरे कार्यक्षेत्र, "मुस्लिम सत्यशोधक मंडल", "महिला दक्षता समिती कोरगांवकर ट्रस्ट, कोल्हापूर" तथा मोफत कायदेशीर सल्लागार समिती में आनेवाली अनेक पीडित नारियोंने किया है, उन सब नाम-अनाम सहेलियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे जीवन सफर से लेकर शिक्षाक्षेत्र में भी "आकाशदीप" बनकर प्रकाश की ओर जाने में सहायता करनेवाली सुश्री प्राचार्या लीलाताई पाटीलजी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मैं अपना परम-पवित्र कर्तव्य मानती हूँ।

विनीत

[प्र. सौ. आशा दस्तगीर आपराद]

कोल्हापुर

दिनांक - २७-११-८९.

- अनुक्रमणिका -

अ.न.	अध्यायका नाम	पृष्ट नंबर
१	मेहरुन्निसा परवेज की जीवनी	१ से ४
२	मेहरुन्निसा परवेज के साहित्यका परिचय	५ से १०
३	हिंदी कहानी लेखिकाएँ और मेहरुन्निसा परवेज	११ से ५७
४	मेहरुन्निसा परवेज की कहानियोंका विकासात्मक अध्ययन	५८ से १११
५	मेहरुन्निसा परवेज की कहानियोंकी विशेषताएँ	११२ से १२९
६	उपसंहार	
	प्रश्नावली	१३० से
	आधार ग्रंथ सूची	